रविवार 4 जुलाई, 2021

विषय — परमेश्वर

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 19 : 1

"आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 18 : 30-35

30 ईश्वर का मार्ग सच्चाई; यहोवा का वचन ताया हुआ है; वह अपने सब शरणागतों की ढाल है॥
31 यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है? हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है?
32 यह वही ईश्वर है, जो सामर्थ से मेरा कटिबन्ध बान्धता है, और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है।
33 वही मेरे पैरों को हरिणियों के पैरों के समान बनाता है, और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर खड़ा करता है।
34 वह मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है, इसलिये मेरी बाहों से पीतल का धनुष झुक जाता है।
35 तू ने मुझ को अपने बचाव की ढाल दी है, तू अपने दाहिने हाथ से मुझे सम्भाले हुए है, और मेरी नम्रता ने महत्व दिया है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 61: 10, 11

10 मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आप को सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।
11 क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने धामिर्कता और धन्यवाद को बढ़ाएगा॥

2. 2 शमूएल 22 : 1 (दाऊद)-7, 14-22

1 और जिस समय यहोवा ने दाऊद को उसके सब शत्रुओं और शाऊल के हाथ से बचाया था, तब उसने यहोवा के लिये इस गीत के वचन गाए;

2 उसने कहा, यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़, मेरा छुड़ाने वाला,
3 मेरा चट्टानरूपी परमेश्वर है, जिसका मैं शरणागत हूँ, मेरी ढाल, मेरा बचाने वाला सींग, मेरा ऊंचा गढ़, और मेरा शरण स्थान है, हे मेरे उद्धार कर्त्ता, तू उपद्रव से मेरा उद्धार किया करता है।
4 मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा, और अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा।
5 मृत्यु के तरंगों ने तो मेरे चारों ओर घेरा डाला, नास्तिकपन की धाराओं ने मुझ को घबड़ा दिया था;
6 अधोलोक की रस्सियां मेरे चारों ओर थीं, मृत्यु के फन्दे मेरे साम्हने थे।
7 अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा; और अपने परमेश्वर के सम्मुख चिल्लाया। और उसने मेरी बात को अपने मन्दिर में से सुन लिया, और मेरी दोहाई उसके कानों में पहुंची।
14 यहोवा आकाश में से गरजा, और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई।
15 उसने तीर चला चला कर मेरे शत्रुओं को तितर बितर कर दिया, और बिजली गिरा गिराकर उसको परास्त कर दिया।
16 तब समुद्र की थाह दिखाई देने लगी, और जगत की नेवें खुल गई, यह तो यहोवा की डांट से, और उसके नथनों की सांस की झोंक से हुआ।
17 उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और मुझे गहरे जल में से खींचकर बाहर निकाला।
18 उसने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से, और मेरे बैरियों से, जो मुझ से अधिक सामर्थी थे, मुझे छुड़ा लिया।
19 उन्होंने मेरी विपत्ति के दिन मेरा साम्हना तो किया; परन्तु यहोवा मेरा आश्रय था।
20 और उसने मुझे निकाल कर चौड़े स्थान में पहुंचाया; उसने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था।
21 यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म के अनुसार व्यवहार किया; मेरे कामों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे बदला दिया।
22 क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा, और अपने परमेश्वर से मुंह मोड़ कर दुष्ट न बना।

3. यशायाह 12 : 2-6

2 परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा रखूंगा और न थरथराऊंगा; क्योंकि प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का विषय है, और वह मेरा उद्धारकर्ता हो गया है॥
3 तुम आनन्द पूर्वक उद्धार के सोतों से जल भरोगे।
4 और उस दिन तुम कहोगे, यहोवा की स्तुति करो, उस से प्रार्थना करो; सब जातियों में उसके बड़े कामों का प्रचार करो, और कहो कि उसका नाम महान है॥
5 यहोवा का भजन गाओ, क्योंकि उसने प्रतापमय काम किए हैं, इसे सारी पृथ्वी पर प्रगट करो।
6 हे सिय्योन में बसने वाली तू जयजयकार कर और ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल का पवित्र तुझ में महान है॥

4. 1 इतिहास 14 : 8 (जब)-17

8 ... जब पलिश्तियों ने सुना कि पूरे इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब
पलिश्तियों ने दाऊद की खोज में चढ़ाई की; यह सुन कर दाऊद उनका साम्हना करने को निकल गया।
9 और पलिश्ती आए और रपाईम नाम तराई में धावा मारा।
10 तब दाऊद ने परमेश्वर से पूछा, क्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूं? और कया तू उन्हें मेरे हाथ में कर देगा?
यहोवा ने उस से कहा, चढ़ाई कर, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर दूंगा।
11 इसलिये जब वे बालपरासीम को आए, तब दाऊद ने उन को वहीं मार लिया; तब दाऊद ने कहा, परमेश्वर
मेरे द्वारा मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाईं टूट पड़ा है। इस कारण उस स्थान का नाम बालपरासीम
रखा गया।
12 वहां वे अपने देवताओं को छोड़ गए, और दाऊद की आज्ञा से वे आग लगाकर फूंक दिए गए।
13 फिर दूसरी बार पलिश्तियों ने उसी तराई में धावा मारा।
14 तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर पूछा, और परमेश्वर ने उस से कहा, उनका पीछा मत कर; उन से मुड़कर
तूत के वृक्षों के साम्हने से उन पर छापा मार।
15 और जब तूत के वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुन पड़े, तब यह जान कर युद्ध
करने को निकल जाना कि परमेश्वर पलिश्तियों की सेना को मारने के लिये तेरे आगे जा रहा है।
16 परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद ने किया, और इस्राएलियों ने पलिश्तियों की सेना को गिबोन से
ले कर गेजेर तक मार लिया।
17 तब दाऊद की कीर्ति सब देशों में फैल गई, और यहोवा ने सब जातियों के मन में उसका भय भर दिया।

5. प्रकाशित वाक्य 21 : 2 (मैं)-7

2 फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन
के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।
3 फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच
में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और
उन का परमेश्वर होगा।
4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप,
न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।
5 और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि
लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।
6 फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को
जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा।
7 जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 472: 24 (सब)-26

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बनाया जाता है वह उसी के द्वारा बनाया जाता है।

2. 465: 8-1

सवाल। — परमात्मा क्या है?

उत्तर। — ईश्वर निगमित, दिव्य, सर्वोच्च, अनंत मन, आत्मा, अंतर: मन, सिद्धांत, जीवन, सत्य, प्रेम है।

सवाल। — क्या ये शब्द पर्यायवाची हैं?

उत्तर। — हाँ वे हैं। वे एक पूर्ण ईश्वर का उल्लेख करते हैं। उनका उद्देश्य देवता की प्रकृति, सार और पूर्णता को व्यक्त करना है। ईश्वर के गुण न्याय, दया, ज्ञान, भलाई, और इतने पर हैं।

सवाल. — क्या एक से अधिक भगवान या सिद्धांत हैं?

उत्तर। — वहाँ नही है। सिद्धांत और उसका विचार एक है, और यह एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी होने के नाते है, और उसका प्रतिबिंब मनुष्य और ब्रह्मांड है।

3. 275 : 20-24

दिव्य तत्वमीमांसा, जैसा कि आध्यात्मिक समझ से पता चलता है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सब माइंड है और वह मन ईश्वर है, सर्व-शक्ति, सर्व-भूत, सर्व-ज्ञानी, — अर्थात् सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान। इसलिए सभी वास्तव में माइंड की अभिव्यक्ति है।

4. 469 : 25-10

हम सर्वशक्तिमानता के उच्च संकेत को खो देते हैं, जब यह स्वीकार करने के बाद कि ईश्वर, या अच्छा, सर्वव्यापी है और सर्व-शक्ति है, हम अभी भी मानते हैं कि एक और शक्ति है, जिसका नाम बुराई है। यह धारणा कि ईश्वरीय धर्मशास्त्र के लिए एक से अधिक मन उतना ही खतरनाक है जितना कि प्राचीन पौराणिक कथाएं और मूर्तिपूजक मूर्तिपूजा। एक पिता, यहां तक कि भगवान के साथ, मनुष्य का पूरा परिवार भाइयों होगा; और एक मन और उस ईश्वर, या भलाई के साथ, मनुष्य का भाईचारा प्रेम और सत्य से मिलकर बना होगा, और इसमें सिद्धांत और आध्यात्मिक शक्ति की एकता होगी जो दिव्य विज्ञान का गठन करती है। एक से अधिक मन का माना गया

अस्तित्व मूर्तिपूजा की मूल त्रुटि थी। इस त्रुटि ने आध्यात्मिक शक्ति की हानि, जीवन की आध्यात्मिक उपस्थिति की हानि को बिना किसी असमानता के अनंत सत्य के रूप में और प्रेम के नुकसान को हमेशा-वर्तमान और सार्वभौमिक मान लिया।

5. 130 : 7-14

ईश्वरीय विज्ञान की बेईमानी से बात करना व्यर्थ है, जो सभी कलह को नष्ट कर देता है, जब आप विज्ञान की वास्तविकता को प्रदर्शित कर सकते हैं। यह संदेह करना नासमझ है कि यदि वास्तविकता ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत के साथ पूर्ण सामंजस्य है, — यदि विज्ञान, जब समझा और प्रदर्शित किया जाता है, तो सभी कलह को नष्ट कर देगा,— चूँकि आप मानते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है; इस आधार से यह इस प्रकार है कि अच्छे और इसके मधुर संगीतकारों में सर्व-शक्ति होती है।

6. 102 : 12-15

क्योंकि परमेश्वर ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, ग्रहों का उसके निर्माता से अधिक मनुष्य पर कोई अधिकार नहीं है; परन्तु मनुष्य, जो परमेश्वर की सामर्थ को प्रतिबिम्बित करता है, सारी पृथ्वी और उसकी सेना पर प्रभुता करता है।

7. 275 : 6-19

दिव्य विज्ञान का प्रारंभिक बिंदु यह है कि भगवान, आत्मा, संपूर्ण है और न ही कोई अन्य शक्ति है और न ही मन — वह ईश्वर प्रेम है, और इसलिए वह दिव्य सिद्धांत है।

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

8. 2 : 15-2

प्रार्थना विज्ञान के होने को नहीं बदल सकती है, लेकिन यह हमें इसके साथ सामंजस्य बिठाती है। अच्छाई सत्य के प्रदर्शन को प्राप्त करती है। एक निवेदन कि ईश्वर हमें बचाए, वह सब नहीं है जिसकी आवश्यकता है। दिव्य मन के साथ विनती करने की एक मात्र आदत, जैसा कि एक मनुष्य के साथ निवेदन करता है, ईश्वर में विश्वास को मानवीय रूप से प्रसारित करता है, - एक त्रुटि जो आध्यात्मिक विकास को बाधित करती है।

भगवान प्यार है। क्या हम उसे और अधिक होने के लिए कह सकते हैं? ईश्वर बुद्धि है। क्या हम उस अनंत मन को सूचित कर सकते हैं जो वह पहले से ही समझ नहीं पाया है? क्या हम पूर्णता को बदलने की उम्मीद करते हैं? क्या हम खुले फव्वारे में और अधिक की याचना करेंगे, जिसे हम स्वीकार करने की तुलना में अधिक डाल रहे हैं? अनिच्छुक इच्छा हमें सभी अस्तित्व और आशीर्वाद के स्रोत के करीब लाती है।

भगवान को भगवान कहना व्यर्थ की पुनरावृत्ति है। भगवान "कल वही है, और आज है, और हमेशा के लिए;" और वह जो पूरी तरह से सही है, वह अपने प्रांत की याद किए बिना सही करेगा।

9. 467 : 9-13

यह अच्छी तरह समझा जाना चाहिए कि सभी पुरुषों का एक मन, एक ईश्वर और पिता, एक जीवन, सत्य और प्रेम होता है। यह तथ्य स्पष्ट होते ही मानव जाति अनुपात में परिपूर्ण हो जाएगी, युद्ध बंद हो जाएगा और मनुष्य का सच्चा भाईचारा स्थापित हो जाएगा।

10. 340 : 15-29

"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥" (निर्गमन 20: 3). पहला आदेश मेरा पसंदीदा पाठ है। यह क्रायश्चियन साइंस प्रदर्शित करता है। यह ईश्वर, आत्मा, मन की विजय को प्रमाणित करता है; यह दर्शाता है कि मनुष्य के पास ईश्वर, शाश्वत भलाई के अलावा कोई अन्य आत्मा या मन नहीं होगा, और सभी लोगों के पास एक मन होगा। प्रथम आज्ञा का दिव्य सिद्धांत, विज्ञान के आधार को बताता है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वास्थ्य, पवित्रता और जीवन को शाश्वत प्रदर्शित करता है। एक अनंत भगवान, अच्छा, पुरुषों और देशों को एकजुट करता है; मनुष्य के भाईचारे का गठन करता है; युद्ध समाप्त करता है; पवित्रशास्त्र पूरा करता है कि, "अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम करो;" बुतपरस्ती और ईसाई मूर्तिपूजा का सत्यानाश करता है, — सामाजिक, नागरिक, आपराधिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में जो कुछ भी गलत है; लिंगों को बराबर करता है; मनुष्य पर शाप की घोषणा करता है, और कुछ भी नहीं छोड़ता है जो पाप कर सकता है, पीड़ित हो सकता है, दंडित हो सकता है या नष्ट हो सकता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6